* उपसंहार *

उपसंहार

"देश - विभाजन की समस्या" का अध्ययन करने के लिये हमें भारत विभाजन की माँग, उसके लिये किए गए आन्दोलन और उन आन्दोलनों से उत्पन्न स्थितियों तथा परिणामों को यथार्थ रूप में देखने के लिये, ऐतिहासिक यथार्थ परिस्थितियों को देखना जरूरी समझा। इसलिए हमने प्रस्तुत ग्रंथ के पहले अध्याय में विभाजन के काल की राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, आर्थिक आदि परिस्थितियों को ऐतिहासिक आधार पर चित्रित किया है। इन्हें हमने दो अवस्थाओं में चित्रित किया है। - [१] विभाजन पूर्व की परिस्थितियाँ और [२] विभाजन के बाद की परिस्थितियाँ।

देश का विभाजन करके पाकिस्तान की माँग ने सन १९४० ई. से जोर पकड़ना प्रारम्भ किया था। मुस्लिम - लीग ने अपने इस माँग के लिये आन्दोलन शुरू किया। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् उसने "डायरेक्ट ऐक्शन" नामक आन्दोलन से हिन्दुओं को आतंकित तथा भयभीत कर छोड़ा। हिन्दुओं को लूट - पाट कर मुस्लिम - बहुल क्षेत्रों से भागने के लिए विवश कर दिया। इस वक्त काँग्रेस पाकिस्तान का प्रबल विरोध करती रही। गाँधी जी ने पाकिस्तान का कड़ा विरोध किया। मुस्लिम - लीग तथा काँग्रेस में खींचातानी होने लगी इस वक्त अँग्रेज इन दोनों में फूट डालने का प्रयत्न कर रहे थे।

मुस्लिम - लीग काँग्रेस को केवल हिन्दुओं की संस्था मानती थी। उन्होंने बंगाल में अपनी सरकार बनाते ही डायरेक्ट एक्शन शुरू कर दिया जिसका उद्देश्य था बंगाल से हिन्दुओं को भगाकर कलकत्ता को पाकिस्तान में मिलाना। लीग और काँग्रेस के इन मतभेदों को देखकर वायसराय ने १६ भारतीय सदस्यों की एक कौंसिल बनाने की घोषणा की। मुस्लिम लीग ने इसका विरोध किया और पाकिस्तान की माँग पर जोर दिया। सारे देश में १६ अगस्त १९४६ ई. को. "प्रतिवाद दिवस" मनाया गया, जिसका उद्देश्य था अपने अधिकारों को प्राप्त करना बंगाल के लीग मंत्री मण्डलने उस दिन सार्वजनिक छुट्टी घोषित की परिणाम स्वरूप कलकत्ता में दंगे - फसाद हुए।

हिन्दुओं के घर लूट लिये गये, जला दिये गये, हत्याएँ की गईं। बाद में हिन्दुओं ने भी संगठित होकर उत्पात का उत्तर उत्पात से देना शुरू किया। सारे देश में साम्प्रदायिक दंगे हुए, कलकत्ता, नोआखाली और बिहार में हुए भीषण दंगे भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं।

पंजाब में भी साम्प्रदायिक हत्याकाण्ड प्रारम्भ हो गया। नेहरू सरकार इन दंगों को रोक नहीं पा रही थी, क्योंकि सेना वायसराय के अधिकार में थी। दंगों को रोकने के लिये पूरी सत्ता शीघ्र ही हस्तान्तरित करनी आवश्यक थी। अतः काँग्रेस को पाकिस्तान की माँग स्वीकार करनी पड़ी। किसीतरह विरोधों, द्वन्द्वों से ऊपर उठकर सरकार भी बनी ही। अंतत: गांधी जी ने भी इसको मान्यता दी और भारतीय स्वतंत्रता - दिवस के कुछ घण्टे पूर्व ही पाकिस्तान का निर्माण हो गया।

प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन की पद्धतियों को स्पष्ट किया है। - तुलना के बिना साहित्य की आलोचना पूरी नहीं हो पाती। तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृतियों का सम्यक् अध्ययन और अनुशीलन, कृतियों की तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप विषय के साम्य - वैषम्य का निरूपण करना है। व्याख्यापरक आलोचना, निर्णयात्मक अथवा शास्त्रीय आलोचना, ऐतिहासिक आलोचना आदि आलोचना की विभिन्न पद्धतियाँ हैं। व्याख्यात्मक, निर्णयात्मक, ऐतिहासिक आलोचना का तुलनात्मक आलोचना में योगदान महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इन पद्धतियों के तुलनात्मक आलोचना में योगदान को यहाँ देखा गया है। प्रस्तुत प्रबन्ध में ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन पद्धति द्वारा तीनों कृतियों में चित्रित विभाजन की समस्या का तुलना की गयी है।

प्रस्तुत प्रबन्ध के तृतीय-अध्याय में विभाजन - सम्बन्धी अन्य उपन्यासों का संक्षिप्त सर्वेक्षण किया गया है। गुरु दत्तजी का "देश की हत्या", कृष्ण बलदेव वैद जी का "गुजरा हुआ जमाना", राही मासूम रजा का "आधा गाँव" तथा जगदीश चंद्रजी का "मुट्ठीभर काँकर" आदि उपन्यासों में

"देश-विभाजन की समस्या" का यथार्थ व्यापक चित्रण मिलता है। "देश की हत्या" में गुरुदत्तजी ने कॉंग्रेस दल की परस्पर - विरोधी नीतियों के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिति, मुस्लिम लीग की पाकिस्तान के स्वरूप की अस्पष्ट परिकल्पना का सूक्ष्म चित्रण किया है॥

"गुजरा हुआ जमाना" में कृष्ण बलदेव वैद जी ने देश - विभाजन के बाद की हिन्दू - मुस्लिम साम्प्रदायिक विद्वेष को प्रस्तुत उपन्यास में पश्चिमी ~~पंजाब~~ पंजाब के एक कस्बे के हिन्दू - मुस्लिम सम्बन्धों द्वारा स्पष्ट किया है। विभाजन के पूर्व की स्थिति, लूट - मार, आगजनी, अपहरण, बलात्कार विभाजन के बाद लोगों का विवश होकर अपने वतन से बिछुड़ना आदि का वास्तविक चित्रण आलोच्य उपन्यास में हुआ है।

"मुट्ठीभर कौंकर" ● उपन्यास में जगदीश चन्द्र जी ने विभाजन के बाद उत्पन्न शरणार्थियों की पुनर्वास की समस्या तथा शरणार्थियों द्वारा उनका निराकरण आदि का विस्तृत चित्रण किया है॥ विभाजन के बाद शरणार्थियों की लूट - पाट कर अपने गाँव आदि को छोड़कर दिल्ली में आगमन, कैम्पों, मैदानों, सड़कों जहाँ कहीं जगह मिले, वहाँ रहना, जीविका के लिये कठोर परिश्रम करना, स्थानीय लोगों का अविश्वास सहकर अपनी व्यवहार कुशलता तथा पुरुषार्थ से अपने को विस्थापित से स्थापित करना आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य "देश - विभाजन की समस्या" का सभी आयामों से ऐतिहासिकता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना॥ इसलिए हमने उपन्यास के चतुर्थ - अध्याय में सागर लिखित "और इन्सान मर गया", यशपाल जी का "झूठा - सच" तथा भीष्म साहनी जी के "तमस" उपन्यास में चित्रित विभाजन की समस्या को विशेष संदर्भ के रूप में लिया है।

"और इन्सान मर गया" सागर जी ने सन् १९४८ में लिखा है। इसे चार खण्डों में विभाजित किया है॥ आलोच्य उपन्यास में लेखक ने विभाजन के समय व्याप्त इन्सान की क्रूरता, बर्बरता, उपेक्षा, घृणा, स्वार्थ, मानव की विवशता और दृढ़ता आदि का यथार्थ चित्रण किया है॥ उपन्यास

का मूल उद्देश्य है विभाजन के समय की घृणा, प्रतिशोध और साम्प्रदायिकता के बारे में बहते हुए मानवों की मनःस्थिति को चित्रित करना। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि घृणा और हिंसा का परिणाम कितना भयानक होता है।

"झूठा - सच" यशपाल जी ने कथानक की विशालता के कारण दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग "वतन और देश" सन् १९५८ ई. में तो द्वितीय भाग "देश का भविष्य" सन् १९६० ई. में प्रकाशित हुआ है। यशपाल जी ने प्रस्तुत उपन्यास में पन्द्रह वर्षों के देश के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण को ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित किया है। विभाजन से उत्पन्न परिस्थितियाँ, उनके प्रभावों, व्यक्ति एवं समाज जीवन में आनेवाले आन्तरिक एवं बाह्य परिवर्तनों को एक व्यापक परिवेश में प्रस्तुत किया है। विभाजन से उत्पन्न दंगे - फसाद, अत्याचार, मानवीय बर्बरता प्रतिशोध की भावना, स्त्रियों की बेइज्जती, शरणार्थियों की समस्या, शरणार्थी कैम्पों की स्थिति, नेताओं की नीति आदि का आलोच्य उपन्यास में यथार्थ चित्रण हुआ है।

"तमस" भीष्म साहनी जी ने विभाजन पूर्व साम्प्रदायिक, धार्मिक संकीर्णता से उत्पन्न अमानवीय कृत्यों का यथार्थ चित्रण किया है। विभाजन विभाजन पूर्व साम्प्रदायिक वैमनस्य की भावना कैसे उभरी ? उसके पीछे कौनसे प्रेरक तत्व रहे आदि को प्रस्तुत करना उपन्यास का मूल उद्देश्य है। "तमस" में लेखक ने धर्म और राजनीति के सभी आयामों को चित्रित किया है। धर्म का विकृत स्वरूप ही ज्यादा प्रधान है। लेखक ने पूँजीवाद तथा साम्प्रदायिकता द्वारा समाज की खोखली आध्यात्मिकता को स्पष्ट किया है। विभाजन के समय व्याप्त अंधकार को हटा देने का प्रयास "तमस" में किया है।

"और इन्सान मर गया", "झूठा - सच", "तमस" आदि उपन्यासों का प्रमुख विषय अथवा उद्देश्य है, "विभाजन समस्या"। इसी को केन्द्र में रखकर अपने - अपने दृष्टिकोण से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का ऐतिहासिकता के आधार पर चित्रण किया है। इन्हीं परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन हमने प्रबन्ध के पाँचवे - अध्याय

में किया है। आलोच्य कृतियों का महत्वपूर्ण साम्य है, "विषय की समानता"। तीनों कृतियों का मूल उद्देश्य "देश - विभाजन की समस्या" को चित्रित करना है। आलोच्य उपन्यास चरित्र - प्रधान न होकर वातावरण प्रधान है। आलोच्य कृतियों में भारत - विभाजन की समस्या का सूक्ष्म, मार्मिक, हृदय - द्रावक घटनाओं द्वारा चित्रण किया गया है

प्रस्तुत प्रबन्ध के अंतिम तथा छठे - अध्याय में विभाजनसम्बन्धी उपन्यासों में आलोच्य उपन्यासों का स्थान प्रस्तुत किया है। "और इन्सान मर गया", "झूठा - सच" तथा "तमस" विभाजनसम्बन्धी उपन्यासों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते है। आलोच्य कृतियों में विभाजन पूर्व की तथा विभाजन के बाद की परिस्थितियों का ऐतिहासिकता के आधार पर सजीव तथा यथार्थ चित्रण हुआ है।

आलोच्य उपन्यास विभाजन सम्बन्धी उपन्यासों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आलोच्य उपन्यास राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों के साथ - साथ अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी रखते हैं।।

आलोच्य विषय की प्रमुख विशेषताएँ :-

भारत - विभाजन पर लिखित साहित्य बहुत व्यापक है, विभाजन और शरणार्थियों से सम्बद्ध शायद ही कोई समस्या ऐसी हो। जो आलोच्य उपन्यासों में अछूती रही हो। भारत विभाजन की माँग, उसके लिये सारे देश में हुए साम्प्रदायिक आन्दोलन और उस आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति जैसे, अल्पसंख्यकों का आतंकित होना, छुरेबाजी, आगजनी, मारकाट, लूटमार, अपहरण, बलात्कार शरणार्थियों के पुर्नवास की समस्या, काफिलों का वर्णन आदि का ऐतिहासिक आधारों पर जीवन यथार्थ चित्रण हुआ है।

विभाजन के समय की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी समस्याओं को सभी आयामों से चित्रित करने का प्रयास आलोच्य उपन्यासों में हुआ है। आलोच्य उपन्यासों में साम्प्रदायिक घृणा, द्वेष, बीभत्स दृश्यों के साथ - साथ साम्प्रदायिक सद्भाव, मानवीयता आदि का भी मार्मिक चित्रण हुआ है।